18

आदमी जो अविनाशी था

(2 राजाओं 11:1-13:25)

हम जल्दी से एलीशा के जीवन के अन्तिम वर्षों में गुज़र रहे हैं। 2 राजाओं 11 में हम ने अतल्यह के यहूदा के सिंहासन की गद्दी छीन लेने और फिर सही राजा के रूप में योआश का राज्य अभिषेक देखा। अध्याय 12 योआश के यरूशलेम का मन्दिर फिर से बनाने की बात बताता है। 2 राजाओं 13 में हम फिर से इस्राएल के उत्तरी राज्य की कहानी लेते हैं जहां एलीशा का काम केन्द्रित रहा था। येहू के मरने के बाद उसके बेटे यहोआहाज को इस्राएल का राजा बनाया गया (13:1; देखें 10:35)। सत्रह वर्ष तक राज करने के बाद यहोआज मर गया और उसकी जगह उसका बेटा योआश[1] राजा बना (13:9)। योआश ने सौलह वर्ष राज किया और ''उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था'' (13:11)। उन दशकों के दौरान एलीशा का कोई उल्लेख नहीं मिलता। परन्तु मेरा सुझाव है कि ''कठिन समयों के लिए परमेश्वर का जन'' रिटायर नहीं हुआ था, यानी वह अपनी सेवकाई पूरी करता रहा। यह निष्कर्ष मैं दो तथ्यों के आधार पर निकालता हूं:

- एलीशा का स्वभाव, जैसा कि हमारे अध्ययन में पीछे दिखाया गया है, संकेत देता है कि वह आराम से बैठने वाला आदमी नहीं है।
- एलीशा के अपने जीवन के अन्त के निकट पहुंचने पर राजा योआश ने यह बात कही: ''हाय मेरे पिता! हाय मेरे पिता! हाय इस्राएल के रथ और सवारो!'' (13:14ख)। इन शब्दों से संकेत मिलता है कि एलीशा देश के आत्मिक सलाहकार (''पिता'') और रक्षा करने के परमेश्वर के माध्यम (''इस्राएल के रथ और सवारो'') के रूप में सेवा करता रहा था।

परन्तु महान व्यक्तियों के जीवन का भी अन्त होना आवश्यक है (इब्रानियों 9:27क)। इस पाठ में हम नबी के जीवन के सूर्य ढलने की गवाही देंगे पर उसके सूर्य का यह ढलना कितना शानदार था![2] मैं इस अन्तिम पाठ को ''आदमी जो अविनाशी था'' नाम दे रहा हूं।

मर रहा, फिर भी भविष्यवाणी के लिए परमेश्वर का जन (13:14-19)

कहानी के आरम्भ में ''एलीशा को वह रोग लग गया जिस से वह मरने पर था'' (आयत 14क)। वह उम्र के अस्सी और नब्बे वर्षों के बीच था।[3] उसकी बीमारी कई बीमारियों में से एक हो सकती है जो बड़ी उम्र के लोगों को लग जाती है।

''इस्राएल का राजा यहोआश'' चिन्तित हुआ और एलीशा से मिलने ''उसके पास गया'' (आयत 14ख)। हमें नहीं मालूम कि एलीशा उस समय कहां था, पर यह जगह सामरिया से

कुछ दूरी पर ही होगी। आम तौर पर राजा लोगों के पास नहीं जाते थे बल्कि वे लोगों को अपने पास बुला लेते थे। यह तथ्य कि यहोआश एलीशा को देखने के लिए गया इस बात का संकेत देता है कि राजा के मन में नबी के लिए सम्मान था।

एलीशा के बिस्तर के पास खड़ा यहोआश ''रोकर कहने लगा[4], 'हाय मेरे पिता! हाय मेरे पिता! हाय इस्राएल के रथो और सवारो!''' (आयत 14ख)। उसके शब्द एलीशा के शब्दों से मेल खाते हैं जो उसने एलिय्याह के इस पृथ्वी को छोड़ जाने के समय कहे थे (2:12)। एलिय्याह की तरह इन शब्दों में यह माना गया कि एलीशा उस देश की ताकत था। परन्तु एलिय्याह के विपरीत एलीशा अपना उत्तराधिकारी नहीं छोड़ रहा था। राजा की बात में यह प्रश्न समाया हुआ था कि ''अब हम क्या करेंगे?''

एलीशा ने अपनी कम होती सामर्थ का इस्तेमाल राजा को यह आश्वस्त करते हुए किया कि उसकी मृत्यु का अर्थ यह नहीं होगा कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ नहीं रहा। एलीशा ने एक सांकेतिक कार्य के साथ यह दिखाया (जैसा कि नबी आम तौर पर करते थे; देखें प्रेरितों 21:10, 11)। उसने राजा से कहा, ''धनुष और तीर ले आ'' (2 राजाओं 13:14घ)। राजा के साथ सशस्त्र लोग होंगे। उनमें से किसी एक से, योआश ''धनुष और तीर ले आया'' (आयत 15ख)।

एलीशा ने योआश से कहा, ''धनुष पर अपना हाथ लगा'' (आयत 16क)। अन्य शब्दों में, ''निशाना लगाने के लिए धनुष पकड़।'' राजा के इस प्रकार से धनुष पकड़ने पर, ''एलीशा ने अपने हाथ राजा के हाथों पर धर दिए'' (आयत 16ख)। क्या नबी को ऐसा करने के लिए पांवों के बल खड़े होने में संघर्ष करना पड़ा या राजा बिस्तर के पास झुक गया ताकि एलीशा जवान आदमी के हाथों पर अपने बूढ़े हाथ रख सके। मुझे नहीं पता परन्तु यह कार्य इस बात पर ज़ोर देने के लिए था कि योआश यहोवा की सहायता के बिना अपने शत्रुओं को हरा नहीं सकता। बाद के एक यहूदी अगुवे को बताया गया था, ''न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है'' (जकर्याह 4:6)।

एलीशा ने वहां उपस्थिति लोगों में से एक को कहा, ''पूर्व की खिड़की खोल'' (2 राजाओं 13:17क)। ''पूर्व की'' यरदन के पूर्वी ओर में होगी जिसे इजाएल ने इस्राएलियों से लिया था (देखें 10:32, 33)। जब शटर खोल दिए गए तो एलीशा ने राजा को आज्ञा दी, ''तीर छोड़ दे!'' ''और उसने तीर छोड़ा'' (13:17ख)।

फिर नबी ने कहा, ''यह तीर यहोवा की ओर से छुटकारे अर्थात अराम से छुटकारे का चिह्न है, इसलिये तू अपेक में अराम को यहां तक मार लेगा कि उनका अन्त कर डालेगा'' (आयत 17ग)। राजा के लिए दोहरा संदेश था। पहला तो यह कि शत्रु पर धावा करने में उसे तीर की तरह हमला करके हिम्मत करनी होगी (यहोशू 8:18 से तुलना करें)। दूसरा यदि वह ऐसा करे तो यहोवा उसे विजय देगा। अपेक में विजय का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। अपेक गलील की झील कि पूर्व में कुछ मील, सामरिया से दमिश्क के मार्ग पर था (*एलीशा के समय में इस्राएल और आस पास के देश* वाला मानचित्र देखें)। आठ या इससे अधिक वर्ष पहले अहाब ने अपेक में अराम पर निर्णायक विजय पाई थी (1 राजाओं 20:26-30)।

परमेश्वर ने विजय का वायदा किया था पर बेशक परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में शर्तें होती हैं, चाहे वे बताई गई हों या उनका संकेत हो। एलीशा ने राजा से कहा, ''तीरों को ले'' (2 राजाओं

13:18क)। ये तीर सम्भवतया उसके तरकश में बच गए थे। फिर नबी ने राजा से कहा, ''भूमि पर मार'' (आयत 18ख)।[5]

क्या इससे देश का राजा परेशान हुआ? उसने तीर लिए और भूमि पर ''तीन बार मार कर ठहर गया'' (आयत 18ग)। तीन बार मारने के बाद जब वह रुक गया तब ''परमेश्वर के जन ने उस पर क्रोधित होकर कहा, 'तुझे तो पांच छह बार मारना चाहिए था, ऐसा करने से तू अराम को यहां तक मारता कि उनका अन्त कर डालता, परन्तु अब तू उन्हें तीन ही बार मारेगा' '' (आयत 19)।[6]

हमें लग सकता है, ''यह तो सही बात नहीं है, एलीशा ने उसे यह नहीं बताया था कि भूमि पर कितनी बार मारना है। उसने तो केवल इतना कहा कि मार और राजा ने वही किया जो उसे कहा गया था। एलीशा को क्रोधित होने और राजा को दण्डित करने का कोई अधिकार नहीं था!'' स्पष्टतया राजा से जब तक नबी उससे रुकने के लिए न कहता भूमि पर मारते रहने की अपेक्षा की थी। क्या योआश को लगा कि ''तीरों की यह सारी बात'' का इस बात से कोई सम्बन्ध होगा या नहीं कि वह अराम पर विजय पाएगा? क्या वह ''बूढ़े आदमी का खेल खेलते हुए थक गया था'' क्या वह अपने आदमियों के सामने ''ऐसा मूर्खतापूर्व कार्य'' अपने लोगों के सामने करने से घबराता था? हमें यहोआश के मन का पता नहीं चल सकता, पर परमेश्वर को पता है। राजा की विजयें सीमित क्यों हुईं। उसका अपना सीमित विश्वास, जोश और हठ था।

इस घटना से ''कम से कम करने'' के खतरे सहित कई सबक मिल सकते हैं। परन्तु मैं क्यों इसी बात पर ज़ोर देना चाहता हूं कि मृत्यु शैय्या पर होने के बावजूद एलीशा भविष्यवाणी के लिए परमेश्वर का जन था। उसने कहा कि योआश अराम के ऊपर तीन विजय पाएगा (आयत 19) और बिल्कुल यही हुआ। छह आयतों के बाद हम पढ़ते हैं, ''योआश ने [अराम के राजा को] तीन बार जीतकर इस्राएल के नगर फिर ले लिए'' (आयत 25ख)।

मर चुका, पर अभी भी सामर्थ के लिए परमेश्वर का जन (13:20, 21)

यहोआश के आने के थोड़ी देर बाद ''एलीशा मर गया'' (आयत 20क)। एलिय्याह ने बवंडर में पृथ्वी को छोड़ा था, पर एलीशा के लिए स्वर्गीय क्षेत्र में जाने के लिए ऐसा कोई नाटकीय बदलाव नहीं हुआ। उसकी मृत्यु आम लोगों की तरह ही हुई (देखें इब्रानियों 9:27क)। उसके मरने के बाद, ''उसे मिट्टी दी गई'' (2 राजाओं 13:20ख)। मिट्टी देने या दफ़नाए जाने के लिए देह को नहलाकर साफ़ कपड़ों और मसालों में लपेटा गया। CJB में कहा गया है ''उन्होंने उसे दफ़नाने वाली गुफा में रखा।'' ''जोसेफस के अनुसार ... , उसका जनाज़ा ज़बर्दस्त था।''[7]

एलीशा की मृत्यु के समय इस्राएल में लूट-पाट करने वाले आम पाए जाते थे। ''प्रति वर्ष बसंत ऋतु में मोआब के दल देश पर आक्रमण करते थे'' (आयत 20ग)। इस्राएली लोग अरामियों के लुटेरे दलों से पहले ही दुखी थे (5:2) और अब उन्हें मोआबी लुटेरों को भी सहना पड़ना था।[8]

एक दिन किसी को दफ़नाए जाने के समय शोक करने वालों ने ऊपर को देखा तो दूर से मोआबियों का एक दल उन्हें दिखाई दिया (13:21क)। अपनी जान बचाने के लिए वे भागने

की तैयारी करने लगे। उनके पास दफ़नाने का काम पूरा करने का समय नहीं था, पर वे लाश को अपने साथ नहीं ले जा सकते थे क्योंकि इससे उन्हें भागने में कठिनाई आती। वे उस लाश को मोआबियों के हाथों अपवित्र होने के लिए छोड़ना भी नहीं चाहते थे। उन्होंने पास की कब्र की गुफ़ा से एक पत्थर लुढ़का दिया, जल्दी जल्दी लाश को अन्दर रखा (13:21क), पत्थर को वापस धकेलकर अपनी जान बचाने के लिए भाग गए।[9]

जब यह हुआ तो वह कब्र वाली गुफ़ा एलीशा की थी। उस ''की हड्डियों के छूते ही वह जी उठा, और अपने पावों के बल खड़ा हो गया'' (आयत 21ख)।[10] क्या आप उस व्यक्ति के मित्रों के आश्चर्य की कल्पना कर सकते हैं जब उन्होंने उसे जी उठे देखा होगा? पुराने नियम में मुर्दों के जी उठने के केवल तीन विवरण हैं। उनमें से दो एलीशा के नाम हैं और एक इस नबी के मरने के बाद का है! ''यहूदी लोग इस आश्चर्यकर्म को एलीशा की सबसे बड़ी महिमा के रूप में मानते थे।''[11]

फिर हम इस घटना से कई प्रासंगिकताएं बना सकते हैं। वचन पाठ में यहां पर सम्भवतया इसे यह आश्वासन देने के लिए शामिल किया गया कि नबी चाहे मर गया था पर वह परमेश्वर नहीं मरा था जिसकी वह सेवा करता था। इस प्रकार एलीशा द्वारा प्रतिज्ञा की गई विजय बिल्कुल सही थी। परन्तु मैं एक और सच्चाई पर ज़ोर दूंगा कि व्यक्ति द्वारा की जाने वाली भलाई उसके सांसारिक सफ़र तक ही सीमित नहीं है। परमेश्वर के भक्त का प्रभाव उसके जीवन काल के बाद भी रहता है।

आपके मरने के बाद आपकी हड्डियां मुर्दा हड्डियों से लगकर उन्हें जिलाएंगी नहीं पर यदि आपका जीवन परमेश्वर को समर्पित है तो आप ने जो बातें कहीं हैं वे लोगों के मनों को छूती रहेंगी। जो जीवन आपने जीया उसका स्मरण ही लोगों के जीवनों को स्पर्श करता रहेगा। आपका भक्तिपूर्ण नमूना उन लोगों को प्रभावित करेगा जो आपको जानते थे और उन्हें जीवन बल्कि आत्मिक जीवन देगा। हाबिल की तरह आपके लिए भी कहा जा सकता है, ''वह मरने पर भी अब तक बातें करता है'' (इब्रानियों 11:4)।

सारांश

राल्फ़ वाल्डो एमर्सन ने कहा कि सभ्यता की परख ''उस देश में से निकलने वाले लोगों की किस्म'' है।[12] जॉर्ज ट्रुअर्ट ने लिखा है, ''सभ्यता निष्कासित अर्थात भयंकर असफलता है, चाहे इसका वाणिज्य कितना भी शोध भरा हो चाहे भौतिक क्षेत्र में इसने कितनी भी प्राप्ती की हो, यदि ऐसी सभ्यता में चरित्र को ऊंचा नहीं उठाया जाता।''[13] उत्तरी इस्राएल के राज्य में चरित्र को ऊंचा नहीं उठाया गया था, पर परमेश्वर के पास एक आदमी था जो चरित्र में ऊंचा था यानी कठिन समयों के लिए उसका जन आज भी हम कठिन समयों में रहते हैं और आज भी हमें एलीशा जैसे चरित्र वाले पुरुषों, स्त्रियों, लड़कों और लड़कियों की आवश्यकता है। डेल हार्टमैन ने इसे इस प्रकार कहा है कि हमें ''असामान्य चरित्र वाले सामान्य लोगों'' की अत्यधिक आवश्यकता है।[14] आप जहां भी रहते हैं ऐसे पुरुष या स्त्री बनने का निश्चय कर लें जिसके ऊपर परमेश्वर निर्भर हरे सके!

टिप्पणियां

[1]फिर से योआश (यहोआश) अर्थात एक ही नाम वाले राजा इस्राएल और यहूदा में मिलते हैं। [2]आप सुन्दर सूर्यास्त का वर्णन कर सकते हैं जिसे आपने देखा हो। [3]मृत्यु के समय एलीशा की सही सही उम्र बताने के लिए हमें यह जानना पड़ेगा कि एलिय्याह का शिष्य बनने के समय उसकी उम्र कितनी थी। [4]मूल में, हम ''उसके चेहरे'' पर रोए, NASB के मेरे संस्करण में एक मार्जन नोट् के अनुसार। राजा के आंसू नबी के गालों पर गिरे होंगे। [5]मूल भाषा का अर्थ ''भूमि में तीर मार।'' [6]अन्त में अराम पर नियन्त्रण कर पाना यारोबाम द्वितीय पर छोड़ा गया (देखें 2 राजाओं 14:25, 28)। [7]जी. रावलिनसन, ''2 किंग्स,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक 5, *1 और 2 किंग्स,* संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एंड जोसेफ एस. एक्सेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 265; जोसेफस *एंटिक्विटीस* 9.8.6. [8]एक पहले पाठ में इस्राएल के विरुद्ध मोआब का विद्रोह बताया गया (2 राजाओं 3:4, 5)। [9]यह पद्य 2 राजाओं 13:21 के पहले भाग में मिलने वाले संक्षिप्त विवरण को विस्तार देने का एक प्रयास है। [10]''यह किसी मरे हुए आदमी की हड्डियों के द्वारा किया जाने वाला *वास्तविक आश्चर्यकर्म* का पहला और मेरा मानना है कि *अन्तिम* विवरण है; और इस पर और ऐसे और आश्चर्चकर्मों पर आश्चर्यकर्मों के काम करने का पूरा प्रबन्ध [कैथोलिक चर्च] द्वारा *स्मृति चिह्न* बनाया गया है।'' (एड्म क्लार्क, *दि होली बाइबल विद ए कमैंट्री एंड क्रिटिकल नोट्स,* अंक 2, *यहोशू- एस्तर* [न्यू यॉर्क: अबिंग्डन-कोक्सबरी प्रैस, तिथि नहीं], 525)।

[11]अल्बर्ट बरनेस, ''किंग्स,'' *दि बाइबल कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स हाउस, 1953), 264; जेम्स बर्टन कॉफमैन एंड थेलमा बी. कॉफमैन, *कमैंट्री ऑन सेकंड किंग्स,* जेम्स बर्टन कॉफमैन कमैंट्रीज़, दि हिस्टोरिकल बुक्स, अंक 6 (अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस, 1992), 171 में उद्धृत। [12]जॉर्ज डब्ल्यू. ट्वयट, *दि प्रोफेट'स मेंटल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1948), 19 में उद्धृत। [13]वही. [14]डेल हार्टमैन, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा 21 दिसंबर 2003 में दिया गया सरमन।

एलीशा के समय में राज कर रहे राजा

यहूदा के राजा	इस्राएल के राजा	अराम (सीरिया) के राजा
यहोशापात	अहाब	बेन्हदद-प्रथम।
(873-48 ई.पू.)	(874-53 ई.पू.)	(लगभग 895-60 ई.पू.)
	अहज्याह	बेन्हदद-प्रथम II
यहोराम	(853-52 ई.पू.)	(860-42 ई.पू.)
(848-41 ई.पू.)	यहोराम/योराम	
अहज्याह	(852-41 ई.पू.)	
(841 ई.पू.)	येहू	हेजेल
अतल्याह	(841-14 ई.पू.)	(842-798 ई.पू.)
(841-35 ई.पू.)		
योआश (यहोआश)	यहोआहाज़	
(835-796 ई.पू.)	(814-798 ई.पू.)	
	योआश (यहोआश)	
	(798-783 ई.पू.)	

(तिथियां अनुमानित दी गई हैं। इन पाठों वाला बेन्हदद ही बेन्हदद द्वितीय है।)